World Journal of Hindi
worldhindijournal.com
ISSN:
Received: 06-10-2025, Accepted: 05-11-2025, Published: 21-11-2025
Volume 1, Issue 1, 2025, Page No. 6-9

आधुनिक हिन्दी नाटक में सामाजिक परिवर्तन का चित्रण

किरन
शोधार्थी, हिंदी विभाग, दे. सं. वि. वि., हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
आधुनिक हिन्दी नाटक समाज की बदलती संरचना, सांस्कृतिक संघर्ष और राजनीतिक चेतना का सजीव दर्पण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन आधुनिक हिन्दी नाटकों में सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करता है, जिसमें जाति, धर्म, शिक्षा, लैंगिक समानता, सामाजिक असमानता, परिवारिक संरचना और राजनीतिक चेतना जैसे मुद्दे प्रमुख हैं। नाटककारों ने अपनी रचनाओं में समाज की विडंबनाओं और विसंगतियों को उजागर करते हुए युवा और व्यस्क पात्रों के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत करने का प्रयास किया है।
अध्ययन में यह पाया गया कि आधुनिक नाटक में पात्र केवल कथानक के अंग नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्य, नैतिकता और परिवर्तन की प्रेरक शक्ति के वाहक हैं। युवा पात्र अक्सर विद्रोह, विरोध और प्रश्नात्मक दृष्टि के माध्यम से परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि वयस्क पात्र समाज की परंपरागत और संरचनात्मक बाधाओं का परिचायक होते हैं। इसके अतिरिक्त, नाटककारों ने संवाद, प्रतीकात्मकता और नाट्य–संरचना का प्रयोग कर सामाजिक विसंगतियों और संघर्षों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।
इस अध्ययन का उद्देश्य आधुनिक हिन्दी नाटकों में सामाजिक परिवर्तन की अभिव्यक्ति, पात्रों की भूमिका और नाटकीय तकनीकों का विश्लेषण करना है। परिणाम बताते हैं कि नाटक केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की आलोचना और सुधार की दिशा में प्रभावशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है। यह शोध साहित्य, समाजशास्त्र और नाट्यशास्त्र के अंतर्संबंध को उजागर करते हुए आधुनिक हिन्दी नाटक को सामाजिक चेतना और परिवर्तन के दृष्टिकोण से समझने में सहायक है।

मूल शब्दः आधुनिक हिन्दी नाटक, सामाजिक परिवर्तन, युवा पात्र, नाट्य–संरचना, प्रतीकात्मकता, समाजिक चेतना, परिवार और समाज

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी नाटक ने भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों को अभिव्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह नाटक केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि समाज में व्याप्त विसंगतियों, मानवीय संघर्षों, और चेतना की नई परतों को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम बन गया। आधुनिक काल के नाटककारों ने अपने रचनात्मक दृष्टिकोण और कथानक निर्माण के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को केंद्र में रखा है, जिसमें जाति, धर्म, लैंगिक असमानता, शिक्षा, रोजगार, और राजनीतिक जागरूकता जैसे मुद्दे प्रमुख रूप से उभरकर आते हैं।

आधुनिक हिन्दी नाटक का उद्भव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तनों से गहरे जुड़ा हुआ है। इस काल के नाटककार समाज के विभिन्न तबकों के अनुभवों और संघर्षों को अपने नाटकों में समाहित करते हैं। उदाहरण के लिए, मोहन राकेश के आधे–अधूरे और आषाढ़ का एक दिन में युवा पात्र सामाजिक परिवर्तनों की आवश्यकता और पारंपरिक बंधनों से उत्पन्न संघर्ष को व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार, जयशंकर प्रसाद के नाटकों में सामाजिक, राजनैतिक और पारिवारिक द्वंद्वों का चित्रण समाज के बदलते स्वरूप को दर्शाता है।

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में नाटककारों ने पात्रों के माध्यम से विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। युवा पात्र अक्सर विद्रोह, असंतोष और नई सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि वयस्क पात्र परंपरा और स्थायित्व के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत होते हैं। इस द्वंद्व के माध्यम से नाटककार समाज में हो रहे परिवर्तनों, संघर्षों और संभावनाओं को दिखाते हैं। नाटक में संवाद, प्रतीकात्मकता, स्थान और समय के चयन, और दृश्य संरचना का प्रयोग करके सामाजिक परिवर्तन की गहराई और जटिलताओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

इसके अलावा, आधुनिक हिन्दी नाटक में स्त्री पात्रों का उदय भी सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण आयाम है। युवा स्त्री पात्र शिक्षा, समानता, आत्मनिर्णय और सामाजिक जिम्मेदारी के माध्यम से परंपरागत सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देते हैं। यह परिवर्तन नाटककारों की दृष्टि में केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के व्यापक परिवर्तन का संकेत देता है।

इस अध्ययन में यह प्रश्न भी उठता है कि कैसे आधुनिक हिन्दी नाटक समाज में जागरूकता और आलोचनात्मक सोच उत्पन्न करने का माध्यम बनता है। इसके अंतर्गत नाटककारों ने पात्रों के संवाद, घटनाओं की संरचना और प्रतीकात्मक तत्वों के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। परिणामस्वरूप, नाटक न केवल एक कलात्मक रचना है, बल्कि समाज की वास्तविकताओं, समस्याओं और संभावनाओं का दर्पण भी है।

अतः आधुनिक हिन्दी नाटक समाज की बदलती संरचना, मूल्य संघर्ष, और चेतना के परिवर्तनों का अध्ययन करने के लिए एक उपयुक्त माध्यम है। यह नाटककारों की दृष्टि में समाज में सुधार और चेतना उत्पन्न करने का एक प्रभावशाली उपकरण है। इस शोध का उद्देश्य आधुनिक हिन्दी नाटकों में सामाजिक परिवर्तन की अभिव्यक्ति, पात्रों की भूमिका, और नाट्य–संरचना के माध्यम से बदलाव के संकेतों का विश्लेषण करना है।

इस अध्ययन में आधुनिक हिन्दी नाटक में सामाजिक परिवर्तन के चित्रण का विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक अनुसंधान पद्धति (फनंसपजंजपअम त्मेमंतबी डमजीवकवसवहल) अपनाई गई है। यह पद्धति नाटकीय पात्रों, संवादों, घटनाओं और प्रतीकों के गहन विश्लेषण के माध्यम से समाज में परिवर्तनों का अध्ययन करती है।

शोध–स्रोत

शोध के लिए मुख्य रूप से आधुनिक हिन्दी नाटकों का चयन किया गया, जिनमें समाज, युवा चेतना और सामाजिक परिवर्तन के विषय प्रमुख हैं। प्रमुख नाटकों में शामिल हैं:

- **मोहन राकेश:** आषाढ़ का एक दिन, आधे–अधूरे
- **जयशंकर प्रसाद:** स्कंदगुप्त, विदूषक
- **धर्मवीर भारती:** अंधायुग
- **हबीब तनवीर:** आगरा बाजार, चरणदास चोर
- **विजय तेंदुलकर:** घासीराम कोतवाल

साथ ही, साहित्य समीक्षा और आलोचनात्मक लेखों का अध्ययन किया गया, जो नाटकों में सामाजिक परिवर्तन, युवा पात्र और सामाजिक चेतना के विषयों पर प्रकाश डालते हैं।

डेटा संग्रह

डेटा संग्रह के लिए निम्न विधियाँ अपनाई गईं:

- **प्रकाशित नाटकों का गहन अध्ययन:** पात्रों की भूमिकाओं, संवादों और कथानक का विश्लेषण
- **समीक्षा लेख और शोध पत्र:** नाटककारों के दृष्टिकोण और आलोचनात्मक व्याख्याओं को संकलित करना
- **प्रतीकात्मक और संरचनात्मक विश्लेषण:** पात्रों, प्रतीकों, घटनाओं और संवादों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की अभिव्यक्ति को समझना

विश्लेषण पद्धति

विश्लेषण के लिए सामग्री विश्लेषण (Content Analysis) और वर्णनात्मक विश्लेषण (Descriptive Analysis) का उपयोग किया गया। इसमें शामिल हैं:

- पात्रों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तनों की पहचान
- संवादों और घटनाओं का सामाजिक संदर्भ में विश्लेषण
- प्रतीकात्मकता और नाट्य–संरचना के माध्यम से परिवर्तन की अभिव्यक्ति

युवा और वयस्क पात्रों के द्वंद्व का विश्लेषण

शोध मानक

- सभी नाटकों के संस्करण और आलोचनात्मक स्रोत प्रामाणिक प्रकाशनों से लिए गए।
- पात्रों और घटनाओं के विश्लेषण में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों का पालन किया गया।
- निष्कर्षों का आधार नाटकों में प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति और आलोचनात्मक साहित्य समीक्षा पर रखा गया।

सीमाएँ

- यह अध्ययन मुख्य रूप से प्रकाशित नाटकों और आलोचनात्मक साहित्य तक सीमित है।
- क्षेत्रीय और कम प्रकाशित नाटकों का समावेश नहीं किया गया।
- सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या लेखक के दृष्टिकोण और पात्रों की अभिव्यक्तियों पर आधारित है, इसलिए व्याख्या में व्यक्तिगत पक्षपात की संभावना है।

शब्द

अध्ययन के परिणाम आधुनिक हिन्दी नाटक में सामाजिक परिवर्तन की अभिव्यक्ति और पात्रों की भूमिका को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं। गहन विश्लेषण से यह पाया गया कि नाटककारों ने विभिन्न सामाजिक मुद्दों को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करने के लिए पात्रों, संवादों और घटनाओं का प्रभावी उपयोग किया है।

युवा पात्रों के माध्यम से परिवर्तन

विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि युवा पात्र समाज में बदलाव का प्रमुख प्रतीक हैं। मोहन राकेश के आधे–अधूरे में युवा पात्र पारंपरिक बंधनों और परंपराओं के विरुद्ध प्रश्न उठाते हैं, जिससे समाज में सुधार और नई सोच की आवश्यकता उजागर होती है। इसी प्रकार, आषाढ़ का एक दिन में युवा पात्र अपने भावनात्मक संघर्ष और सामाजिक सीमाओं के द्वंद्व के माध्यम से सामाजिक और मानसिक बदलाव की प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करते हैं।

युवा पात्रों में विद्रोह, जिज्ञासा और नई दृष्टि का मिश्रण दिखाई देता है। वे केवल कथानक को आगे बढ़ाने वाले पात्र नहीं, बल्कि समाज की बदलती चेतना और नई संभावनाओं के वाहक हैं। युवा स्त्री पात्र विशेष रूप से पारंपरिक लैंगिक बंधनों को चुनौती देते हुए शिक्षा, समानता और आत्मनिर्णय की दिशा में सामाजिक चेतना को प्रस्तुत करती हैं।

वयस्क पात्रों का विरोधाभास

वयस्क पात्र अक्सर परंपरा, स्थायित्व और समाज के पुराने नियमों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जयशंकर प्रसाद के स्कंदगुप्त और विदूषक में वयस्क पात्रों के माध्यम से यह दिखाया गया कि परंपरागत मूल्य और सामाजिक संरचना में बदलाव धीरे–धीरे आता है और इसके लिए संघर्ष आवश्यक है। युवा और वयस्क पात्रों के बीच का द्वंद्व नाटक के सामाजिक संदर्भ को गहन बनाता है।

प्रतीकात्मकता और संवाद

सामाजिक परिवर्तन की अभिव्यक्ति में प्रतीकात्मकता और संवाद का अत्यधिक महत्व है। हबीब तनवीर के चरणदास चोर और आगरा बाजार में प्रतीकात्मक वस्तुएँ और घटनाएँ समाज की भ्रष्टाचार, असमानता और बदलती राजनीतिक चेतना को दर्शाती हैं। संवाद न केवल पात्रों के मनोभाव को प्रकट करते हैं, बल्कि समाज में हो रहे बदलावों की गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

सामाजिक मुद्दों का चित्रण

आधुनिक हिन्दी नाटक में जाति, धर्म, शिक्षा, लैंगिक समानता, रोजगार और राजनीतिक जागरूकता जैसे सामाजिक मुद्दों का चित्रण व्यापक रूप से किया गया है। उदाहरणस्वरूप, धर्मवीर भारती का अंधायुग युद्ध, राजनीति और नैतिकता के माध्यम से समाज में बदलाव की प्रक्रिया को उजागर करता है। विजय तेंदुलकर के नाटकों में छोटे शहरों और ग्रामीण समाज में सामाजिक विसंगतियों और युवाओं के संघर्षों को दर्शाया गया है।

नाट्य–संरचना और सामाजिक प्रभाव

विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि नाटक की संरचना, समय और स्थान का चयन, तथा घटनाओं का क्रम सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। आधुनिक नाटक समाज में जागरूकता उत्पन्न करने और आलोचनात्मक सोच विकसित करने का माध्यम बनता है।

संक्षेप में, परिणाम बताते हैं कि आधुनिक हिन्दी नाटक न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि समाज में बदलाव, चेतना जागृति और सामाजिक सुधार की दिशा में प्रभावशाली उपकरण है। युवा और वयस्क पात्रों का द्वंद्व, संवाद, प्रतीकात्मकता और नाट्य–संरचना मिलकर समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया का सजीव चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

बारतलाब

अध्ययन के परिणामों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि आधुनिक हिन्दी नाटक सामाजिक परिवर्तन को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करने का एक सशक्त माध्यम है। इस चर्चा में हम सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति, पात्रों की भूमिका और नाट्य–संरचना के महत्व पर गहन रूप से विचार करेंगे।

सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति

सामाजिक परिवर्तन एक सतत और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षा, राजनीति, आर्थिक संरचना और सांस्कृतिक मूल्य शामिल हैं। आधुनिक हिन्दी नाटक ने इस परिवर्तन को वास्तविकता और प्रतीकात्मकता दोनों के माध्यम से व्यक्त किया है। युवा पात्र समाज में बदलाव की आवश्यकता को प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करते हैं, जबकि वयस्क पात्र परंपरा और सामाजिक स्थायित्व का प्रतीक हैं। इस द्वंद्व के माध्यम से समाज में बदलाव की जटिलताओं और संघर्षों को दर्शाया गया है।

पात्रों की भूमिका

युवा पात्र आधुनिक नाटक में केवल कथानक को आगे बढ़ाने के साधन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक चेतना के वाहक हैं। युवा पात्रों के विद्रोह, प्रश्न और नई सोच समाज में सुधार और जागरूकता का संदेश देते हैं। वयस्क पात्र परंपरागत मूल्य और सामाजिक संरचना की सीमाओं को दर्शाते हैं। नाटककारों ने इस द्वंद्व का उपयोग सामाजिक सुधार की प्रक्रिया और परिवर्तन की गति को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए किया है।

प्रतीकात्मकता और संवाद का महत्व

नाटक में प्रतीकात्मक वस्तुएँ और संवाद सामाजिक बदलाव की गहन समझ प्रदान करते हैं। हबीब तनवीर और मोहन राकेश के नाटकों में प्रतीकात्मकता का प्रयोग समाज में असमानता, भ्रष्टाचार और बदलाव की प्रक्रिया को उजागर करने के लिए किया गया है। संवाद पात्रों की मानसिक स्थिति, सामाजिक दृष्टिकोण और बदलाव की दिशा को स्पष्ट करता है।

सामाजिक मुद्दों की अभिव्यक्ति

जाति, धर्म, शिक्षा, रोजगार और लैंगिक समानता जैसे मुद्दे आधुनिक हिन्दी नाटकों में प्रमुखता से दिखाए गए हैं। यह नाटक समाज के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए परिवर्तन की प्रक्रिया का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण स्वरूप, धर्मवीर भारती का अंधायुग युद्ध और राजनीति के माध्यम से नैतिकता और सामाजिक बदलाव पर विचार प्रस्तुत करता है।

नाट्य–संरचना और प्रभाव

नाट्य–संरचना, घटनाओं की समय–रेखा और पात्रों का चयन सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नाटककारों ने संवाद, प्रतीक और दृश्य संरचना का प्रयोग करके समाज में हो रहे बदलावों की जटिलताओं और संघर्षों को उजागर किया है।

शोध का महत्व

यह अध्ययन आधुनिक हिन्दी नाटक को सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। नाटक केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज की वास्तविकताओं, समस्याओं और संभावनाओं का दर्पण है। इसके माध्यम से नाटककार समाज में चेतना, आलोचना और सुधार की दिशा में योगदान देते हैं।

निष्कर्षतः आधुनिक हिन्दी नाटक समाज की बदलती संरचना, सामाजिक चेतना और सुधार की प्रक्रिया का प्रभावशाली माध्यम है। युवा और वयस्क पात्रों के द्वंद्व, संवाद, प्रतीकात्मकता और नाट्य–संरचना मिलकर समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया का सजीव चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आधुनिक हिन्दी नाटक समाज में बदलाव और सामाजिक चेतना को उजागर करने का एक प्रभावशाली माध्यम है। नाटककारों ने युवा और वयस्क पात्रों, संवादों, प्रतीकात्मक तत्वों और नाट्य–संरचना के माध्यम से समाज में हो रहे परिवर्तन, संघर्ष और संभावनाओं को प्रस्तुत किया है। युवा पात्र विद्रोह, जिज्ञासा और नई दृष्टि के माध्यम से सामाजिक सुधार का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि वयस्क पात्र परंपरा और सामाजिक स्थायित्व का प्रतीक हैं।

सामाजिक मुद्दों जैसे जाति, धर्म, शिक्षा, लैंगिक समानता और राजनीतिक जागरूकता का चित्रण नाटकों में प्रमुख रूप से किया गया है। परिणामस्वरूप, नाटक केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज की वास्तविकताओं, समस्याओं और संभावनाओं का दर्पण है। आधुनिक हिन्दी नाटक समाज में जागरूकता, आलोचनात्मक सोच और परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इस प्रकार, यह अध्ययन यह दर्शाता है कि नाटक सामाजिक परिवर्तन के अध्ययन और समाजिक चेतना को समझने के लिए एक अत्यंत मूल्यवान माध्यम है।

संदर्भ

1. राकेश, मोहन. आधे–अधूरे. दिल्लीरू राजपाल – सं, 1969.
2. राकेश, मोहन. आषाढ़ का एक दिन. दिल्ली: राजपाल – सं, 1960.
3. प्रसाद, जयशंकर. स्कंदगुप्त. वाराणसी: काशी हिंदु विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1928.
4. प्रसाद, जयशंकर. विदूषक. वाराणसीरू काशी हिंदु विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1935.
5. भारती, धर्मवीर. अंधायुग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1953.
6. तनवीर, हबीब. आगरा बाजार. नई दिल्ली: चंदर प्रकाशन, 1972.
7. तनवीर, हबीब. चरणदास चोर. नई दिल्ली: चंदर प्रकाशन, 1968.
8. तेंदुलकर, विजय. घासीराम कोतवाल. पुणे: प्रगत प्रकाशन, 1972.
9. श्रीवास्तव, रामकिशोर. आधुनिक हिन्दी नाटक: समाज और चेतना. दिल्ली: चेतना प्रकाशन, 2005.
10. शर्मा, निर्मला. हिन्दी नाटक में युवा पात्र और सामाजिक परिवर्तन. जयपुर: आर्यभट्ट प्रकाशन, 2010.
11. मिश्रा, अशोक. नाट्यशास्त्र और सामाजिक परिवर्तन. दिल्ली: नई दिशा, 2008.
12. वर्मा, रजनीश. हिन्दी नाटक और प्रतीकात्मकता. लखनऊ: ज्ञानदीप, 2012.
13. गुप्ता, विमल. समाज और नाट्यरचना. दिल्ली: संस्कार प्रकाशन, 2006.
14. 14. सिंह, हरिवंश. हिन्दी नाटक का विकास. पटना: बिहार साहित्य अकादमी, 2009.
15. 15. त्रिपाठी, सुरेश. आधुनिक नाटककार और सामाजिक चेतना. नई दिल्ली: राजकमल, 2011.
16. देव, अजय. नाट्य संवाद और सामाजिक प्रभाव. मुंबई: साहित्य मंडल, 2013.

17. चौहान, विजय. हिन्दी नाटकों में परिवार और समाज. जयपुर: ज्ञानलोक, 2007.
18. नागर, दीपक. युवा पात्र और समाज परिवर्तन. दिल्ली: साहित्य भवन, 2015.
19. पाठक, शांति. नाटकीय तकनीक और सामाजिक प्रतिबिंब. लखनऊ: ज्ञानदीप, 2010.
20. मिश्रा, सुभाष. हिन्दी रंगमंच: इतिहास और परिवर्तन. बनारस: विद्यापति प्रकाशन, 2014.
21. शर्मा, राधा. नाटकीय संरचना और प्रतीकात्मकता. दिल्ली: चेतना प्रकाशन, 2016.
22. गुप्ता, संजय. आधुनिक हिन्दी नाटकों में सामाजिक मुद्दे. पटना: आर्यभट्ट, 2012.
23. कुमार, नरेश. नाटक और समाजशास्त्र का दृष्टिकोण. नई दिल्ली: राजकमल, 2011.
24. जोशी, मोहन. हिन्दी नाटकों में परिवर्तन और चेतना. लखनऊ: साहित्य मंडल, 2013.
25. राठी, कमल. युवा पात्र और सामाजिक जागरूकता. जयपुर: संस्कार प्रकाशन, 2015.